• बाल कविता...

आज न आए

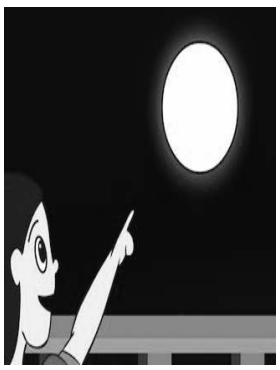

आज न आए चंदा मामा
आज कहां पर खोए वे
क्या वे आना भूल गए हैं
या घर में ही सोए वे
तारे बैठे बाट जोहते
आसमान भी फीका है
सब कहते हैं, सुंदर चंदा
आसमान का टीका है
डांट पड़ी क्या उनको घर में
फूट-फूटकर रोए वे
वे आते, चांदनी चमकती
धरती अच्छी लगती तब
यह जो फैली है अंधियारी
दूर कहीं पर भगती तब
इतने उजले हैं, साबुन से
खूब गए हैं धोए वे
हम बच्चों के तो मामा हैं
अम्मी के हैं भाई वे
इसीलिए अक्सर आ-आकर
देते यहां दिखाई वे
मगर आज नभ के सागर में
क्या हैं गए डुबोए वे
आज न आए चंदा मामा
आज कहां पर खोए वे।

-श्रीप्रसाद

• चुटकुले...

पिता पुत्र से – आज तुम स्कूल क्यों नहीं गए?
पुत्र – कल हम लोगों को स्कूल में तौला गया था। आज बेच दिया जाएगा। यही कारण है कि मैं आज स्कूल नहीं गया।

महिला – तुमने मेरे बेटे की पिटाई क्यों की?
मोटी महिला – उसने मुझे मोटी भैंस कहा था।
महिला – तो बहन, तुम्हें बेटे को पीटने के बजाय अपनी खुराक में कमी करनी चाहिए।

मां बेटे से – बेटे, घर में कायदे से रहना चाहिए। तुम्हें मेरी हर बात माननी चाहिए।
बेटे ने सिर हिलाते हुए कहा – मैं समझ गया मम्मी, जैसे पापा रहते हैं।

• क्या आप जानते हैं...

कीमती पत्थर...

अगर आपसे कोई सवाल करें कि दुनिया का सबसे कीमती पत्थर कौन सा है, तो ज्यादातर लोगों का जवाब होता है हीरा। लेकिन अधिकांश लोगों को नहीं मालूम की हीरे के अलावा भी दुनिया में ऐसे ढेरों रत्न है, जो न सिर्फ बेशकीमती हैं बल्कि उनकी कीमत भी हीरे से ज्यादा होती है।

जरमेजेवाइट :आपने शायद ही इस रत्न का नाम सुना हो। यह एल्युमिनियम परिवार का सदस्य है, जिसमें फ्लोराइड और हाइड्रोआक्साइड भी होता है। सबसे पहले यह साइबेरिया के पहाड़ आडून-चिलोन में 1883 में खोजा गया था। यह पत्थर क्वार्टज की तरह कठोर होता है। अगर मोह स्केल पर इसकी कठोरता नापी जाए तो यह 6.5 से 7.5 के बीच आती है इसलिए इसका उपयोग आभूषण बनाने में किया जाता है। बाजार में शुद्धता के आधार पर इसकी कीमत 2 हजार डॉलर प्रति कैरेट तक हो सकती है।

फायर ओपेल: फायर ओपेल की बात की जाए तो यह कोई खनिज नहीं है, बल्कि यह एक उप खनिज है क्योंकि अन्य खनिजिय पत्थरों की तरह इसमें कोई क्रिस्टलीय संरचना नहीं पाई जाती है। यह उपखनिज सिलिका यानी रेत के हाइड्रेट और डाइआक्साइड के मिश्रण का ही परिणाम होती है। ओपेल कई रंगों में आती है, इसका रंग इस बात पर निर्भर करता है कि इसे किस वातावरण और स्थान से निकाला गया है। कई रंगों में आने वाला यह खूबसूरत पत्थर भी आभूषण बनाने के काम में बहुत इस्तेमाल होता है और बाजार मे क्वालिटी के आधार पर इस पत्थर की कीमत 2 हजार 300 डॉलर प्रति केरेट तक होती है।

पाउडेरेटाइट-कीमती रत्नों की सूची में पाउडेरेटाइट को भी जगह दी जा सकती है क्योंकि बाजार में अच्छी गुणवत्ता वाला यह पत्थर 3000 डॉलर प्रति कैरेट तक बिकता है। इसे पहली बार 1960 में कनाडा के क्यूबेक में मोंट सेंट हिलेरी में खोजा गया था लेकिन उत्कृष्ट गुणवत्ता वाला पाउडेरेटाइट इसके 40 साल बाद मोगोक बर्मा में खोजा गया जो 9.41 कैरेट का था। गुलाबी रंग के इस पत्थर को भी आभूषण उद्योग में प्रमुखता से इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि इसकी कठोरता भी मोह स्केल पर 5.0 तक आती है।

• बाल कहानी...

कंजूसी का फल

उसी गांव में श्याम नामक एक बुद्धिमान लड़का रहता था। वह एक आदमी को साथ लेकर जमींदार के पास पहुंचा। श्याम ने जमींदार को बताया कि वह उसके खेतों पर काम करना चाहता है।

इस पर जमींदार बोला– तुम्हें पूरे साल काम करना पड़ेगा। बीच में भागोगे तो नहीं? तो तुम क्या दोगे? यह बताओ, तभी मैं बताऊंगा....

बहुत पुरानी बात है, किसी गांव में एक जमींदार रहता था। वह बहुत कंजूस था। वह अपने खेत जोतने के काम में जिसे रखता वह कुछ समय बाद ही काम छोड़कर भाग जाता था। क्योंकि जमीन जोतना, बीज बोना, पानी देना, इन सब कामों के लिये वह केवल खाने भर को ही देता था। फसल कट जाने पर वह खाने को भी नहीं देता था।

एक समय ऐसा आया कि उसे खेतों पर काम करने के लिये आदमी मिलना मुश्किल हो गये। वह जिसे भी काम पर रखने की कोशिश करता, वही दुगने पैसे मांगता।

उसी गांव में श्याम नामक एक बुद्धिमान लड़का रहता था। वह एक आदमी को साथ लेकर जमींदार के पास पहुंचा। श्याम ने जमींदार को बताया कि वह उसके खेतों पर काम करना चाहता है।

इस पर जमींदार बोला- तुम्हें पूरे साल काम करना पड़ेगा। बीच में भागोगे तो नहीं?

तो तुम क्या दोगे? यह बताओ, तभी मैं बताऊंगा। श्याम ने जवाब दिया

जमींदार बोला-

यह बात तो मैं तुम्हारा काम देखकर ही तय करूंगा। अगर अच्छा काम करोगे तो साल में बारह किलोग्राम चावल दूंगा।

उसकी बात सुनकर श्याम बोला-अब आप मेरी भी शर्त सुन लें। आप साल में मुझे एक बीज धान का देना जिसे नीची जमीन में मैं खुद लगाऊंगा। एक बीज गेहूं का देना जिसे मैं ऊंची जमीन में लगाऊंगा। पहनने को कपड़े देना। प्रतिदिन एक पत्तल चावल खाने को देना। इसके बाद अगर मैं दम भर काम न करूं तो मेरा हाथ काट लेना तुम शर्त के विरुद्ध काम करोगे तो मैं तुम्हारा हाथ काटूंगा, बोलो मंजूर है?

जमींदार ने उसकी शर्त मान ली।

श्याम ने मजदूरी करनी शुरू कर दी। जब वह खाना लेने के लिए हाजिर हुआ तो एक लम्बा-चौड़ा केले का पत्ता लेकर हाजिर हुआ।

जमींदार ने जब केले का पत्ता देखा तो वह गुस्से में लाल होकर बोला- तुम केले के पत्ते में चावल खाओगे? समझ क्या रखा है।

पर मालिक शर्त तो यही थी ना? श्याम मुस्कुराकर बोला।

विवश होकर उसे केले के पते में ही चावल देने पड़े। अब तो वह रोज ही केले के पत्ते में चावल खाता।

यह बात सही थी कि श्याम काम में कोई कंजूसी नहीं करता था। वह सारे काम को अपने हाथों से पूरा करता।

मजदूरी में वह एक गेहूं का दाना लेता। उसने मालिक से कहा- मालिक, मैंने इस गोबर के ढेर में गेहूं बो दिया है। धान का बीज उसने नीची जमीन में बो दिया। गेहूं के पौधे में अनेक दाने निकले उसी प्रकार धान के पौधे में भी अनेक दाने निकले।

श्याम ने उन सभी को बीज के रूप में रख छोड़ा। दूसरे साल भी धान व गेहूं के खूब पौधे हुए। इसके अलावा उसे मजदूरी के रूप में एक-एक बीज अलग से मिला। उन बीजों को भी उसने अगले साल के लिये रख छोड़ा। धान बोने के लिये उसे शर्त के अनुसार नीची जमीन तथा गेहूं बोने के लिये ऊंची जमीन मिली।

इस तरह छः साल के अन्दर मालिक के हाथों से सारी जमीन निकल गयी। श्याम ने नीचे की जमीन पर धान के पौधे लगा रखे थे तथा ऊपर गेहूं के।

अंत में जमींदार ने पंचायत के आगे जाकर शिकायत की। श्याम भी वहां हाजिर हुआ।

गांव वालों ने श्याम को समझाते हुए कहा कि इस बार जमींदार को माफ कर दो उसे खूब दण्ड मिला है।

श्याम को जमींदार पर दया आ गयी। उसने आधी जमीन उसे दे दी। उस दिन से जमींदार एकदम बदल गया। अब वह सभी मजदूरों के साथ अच्छा व्यवहार करता तथा उन्हें भरपेट खाना और उचित मजदूरी देता। गांव के लोग श्याम की सूझ-बूझ की प्रशंसा किये नहीं थकते थे।

• जानकारी...

छत्रपति शिवाजी...

छत्रपति शिवाजी महाराज को शिवाजी या शिवाजी राजे भोसले के नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म 19 फरवरी, 1630 में शिवनेरी दुर्ग जो कि पुणे जुन्नर नगर में शाहजी भोंसले की पत्नी जीजाबाई (राजमाता जिजाऊ) की कोख से हुआ था। उनके पिताजी शहाजी राजे भोसले बीजापुर के दरबार में उच्चाधिकारी थे। उन्हें युद्ध का प्रशिक्षण और प्रशासन की समझ दादोजी कोंडदेव जी से मिली थी। वह भारत के महान योद्धा एवं रणनीतिकार थे। शिवाजी बहुत बुद्धिमान थे और उन्हे यह कतई मंजूर नहीं था की लोग जात पात के झगड़ों में उलझे रहे। उन्होंने एक शक्तिशाली नौसेना का निर्माण किया था। इसलिए उन्हें भारतीय नौसेना के पिता के रूप में जाना जाता है। अपने प्रारंभिक चरणों में ही उनको नौसैनिक बल के महत्व का एहसास हो गया था। क्योंकि उन्हें यकीन था कि यह डच, पुर्तगाली और अंग्रेजों सहित विदेशी आक्रमणकारियों से स्वतंत्र रखेगा और समुद्री डाकुओं से कोंकण तट की भी रक्षा करेगा।

• रोचक...

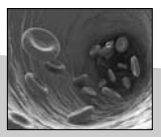

- **इंसान के शरीर की एक रक्त कोशिका को शरीर का पूरा चक्कर लगाने में तकरीबन 60 सेकंड का समय लगता है।**
- **विल्जेलम रोन्टजेन ने पहला नोबेल पुरस्कार 1895 में फिजिक्स में क्ष-किरणों (X-Ray) की खोज के लिये जीता था।**
- **2000 में से हर एक बेबी का जन्म दांतो के साथ ही होता है।**
- **दुनिया का सबसे लंबा पेड़ ऑस्ट्रेलियन यूकेलिप्टस है- 1872 में यह तकरीबन 435 फीट ऊंचा था।**